तर्ज--यूं हसरतों के दाग

खिन विरहा न सहा कभी जिसने हजूर का
क्यो जी रही है देखे बिना जलवा नूर का

1--जिस दिल को रहना चाहिये उनके ख्याल में
उस दिल से जुड़ गया है रिश्ता गुरूर का

2--रहते है बेखबर से हम उनसे इस तरह
जैसे ना वक्त देखा हो इश्के सरूर का

3--अनमोल वक्त हाथों से निकला निकल रहा
कहां खो गया असर वो अर्श के अंकूर का

4--आखिर तो हक के रुबरू होना है एक दिन
कैसे करेगी सामना उनके जहूर का

Nijanand App